८. रैदास के पद

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिऐ।

1. रैदास ने स्वयं को 'पानी' और प्रभु को क्या माना है?

(क) दीपक ☐ (ग) धागा ☐

(ख) चंदन ☐ (घ) बादल ☐

2. रैदास को किसकी रट लग गई?

(क) ईश्वर की ☐ (ग) हनुमान की ☐

(ख) ब्रह्म की ☐ (घ) राम-नाम की ☐

3. 'जैसे चितवत चंद चकोरा' पंक्ति में 'चकोरा' प्रभु के किस रूप की ओर निहारता है?

(क) दीपक रूपी ☐ (ग) चाँद रूपी ☐

(ख) मोती रूपी ☐ (घ) पानी रूपी ☐

4. रैदास जी ने अपने आपको क्या कहा है?

(क) स्वामी ☐ (ग) राजा ☐

(ख) दास ☐ (घ) भक्त ☐

5. दूसरे पद में रैदास ने केवल किस पर भरोसा जताया है?

(क) तीरथ और व्रत पर ☐

(ख) समाज के लोगों पर ☐

(ग) प्रभु के चरण कमलों पर ☐

(घ) अपनी धन-दौलत पर ☐

(ख) पहले पद में कवि ने प्रभु और स्वयं की तुलना किन-किन वस्तुओं से की है? तालिका को पूरा कीजिए।

प्रभु का रूप	कवि (रैदास) का रूप
1. चंदन	1. _____
2. _____	2. मोरा
3. दीपक	3. _____
4. _____	4. धागा
5. स्वामी	5. _____

(ग) निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रत्येक कथन के सामने 'सत्य' या 'असत्य' लिखिए।

1. रैदास जी भगवान से दूरी बनाना चाहते हैं। – _____
2. 'प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती' में भक्त और भगवान का संबंध बताया गया है। – _____
3. कवि तीर्थ और व्रत को सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं। – _____
4. रैदास जी ने भक्ति को सबसे बड़ा साधन माना है। – _____
5. 'हरि सो जोरि सबन सो तोरों' का अर्थ है सब से संबंध जोड़ना। – _____

(घ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में (लगभग 25-30 शब्दों में) लिखिए।

1. रैदास की भक्ति अनन्य क्यों है?

   उत्तर: _____

   _____

2. रैदास के प्रथम पद में कवि ने स्वयं को किन-किन रूपों में माना है?

   उत्तर: _____

   _____

3. 'जाकी अंग-अंग बास समानी' का क्या आशय है?

   उत्तर: _____

   _____

4. 'जैसे चितवत चंद चकोरा' से क्या तात्पर्य है?

   उत्तर: _____

   _____

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से (लगभग 80-100 शब्दों में) लिखिए।

1. 'रैदास के पद' के आधार पर भक्त और भगवान के संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर: _____

   _____

   _____

   _____

   _____

_____

2. 'सबही पहर तुम्हारी आसा' पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

   उत्तर: _____

   _____

   _____

   _____

   _____

   _____

3. रैदास प्रभु के सच्चे भक्त हैं — प्रमाण सहित स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर: _____

   _____

   _____

   _____

   _____

   _____

4. रैदास सांसारिक नहीं, संत कवि हैं — सिद्ध कीजिए।

   उत्तर: _____

   _____

   _____

   _____

   _____

   _____

(च) नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो समान अर्थ वाले शब्द लिखिए।

1. पानी - _____ _____
2. सोना - _____ _____
3. स्वामी - _____ _____
4. दीपक - _____ _____

(छ) निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक (विलोम) शब्द लिखिए।

1. भरोसा X _____
2. स्वामी X _____

3. ज्योति X _____ 4. दिन X _____

(ज) काव्य में प्रयुक्त निम्नलिखित पदों का समास विग्रह कीजिए और समास का नाम बताइए।

1. अंग-अंग - विग्रह: _____ समास का नाम: _____
2. चरण-कमल - विग्रह: _____ समास का नाम: _____
3. दिन-रात - विग्रह: _____ समास का नाम: _____

(झ) निम्नलिखित शब्दों के आधुनिक मानक हिंदी रूप (तद्भव से तत्सम/मानक) लिखिए।

1. बास = _____
2. जोति = _____
3. बरै = _____
4. राती = _____
5. तीरथ = _____
6. दूजा = _____

(ञ) काव्य की सुंदरता बढ़ाने वाले अलंकारों की पहचान कीजिए।

1. "जैसे चितवत चंद चकोरा" - अलंकार: _____
2. "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी" - अलंकार: _____
3. "जहँ जहँ जाओ तुम्हारी पूजा" - अलंकार: _____

Answer

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) चंदन
2. (घ) राम नाम की
3. (ग) चाँद (चन्द्रमा) रूपी
4. (ग) दासा (दास/सेवक)
5. (ग) प्रभु के चरण कमलों पर

(ख) तालिका:

1. पानी
2. घन (बादल)
3. बाती
4. मोती
5. दास

(ग) सत्य / असत्य

1. असत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. असत्य

(घ) संक्षेप में उत्तर (25-30 शब्द)

1. रैदास की भक्ति अनन्य है क्योंकि वे केवल ईश्वर पर भरोसा करते हैं, सांसारिक बंधनों को त्याग कर स्वयं को पूर्ण रूप से प्रभु के चरणों में समर्पित कर चुके हैं।
2. कवि ने स्वयं को पानी, वन का मोर (मोरा), दीपक की बाती, धागा और प्रभु का सच्चा दास माना है।
3. जैसे पानी में चंदन मिलने पर उसकी सुगंध कण-कण में बस जाती है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर की भक्ति और प्रेम रैदास के रोम-रोम में समा गया है।
4. जिस प्रकार चकोर पक्षी एकाग्र होकर चंद्रमा को निहारता रहता है, उसी प्रकार भक्त रैदास भी निरंतर अपने प्रभु के दर्शनों की चाह में डूबे रहते हैं।

(ङ) विस्तार से उत्तर (80-100 शब्द)

1. रैदास ने भगवान को चंदन, बादल, दीपक, मोती और स्वामी माना है, जबकि स्वयं को क्रमशः पानी, मोर, बाती, धागा और दास माना है। यह उनके बीच अटूट, पूरक और दास्य भाव के एकाकार संबंध को दर्शाता है।
2. इसका अर्थ है कि भक्त को चौबीसों घंटे (हर पहर) केवल अपने प्रभु की आस रहती है। वे भौतिक सुखों की कामना छोड़कर मन, वचन और कर्म से हर क्षण ईश्वर की कृपा और दर्शन की प्रतीक्षा करते हैं।
3. रैदास सच्चे भक्त हैं क्योंकि उनकी भक्ति बाह्य आडंबरों (तीर्थ, व्रत) से मुक्त है। वे केवल ईश्वर के चरणों पर भरोसा करते हैं और दुनिया के झूठे रिश्तों को त्याग कर प्रभु के प्रति पूर्ण आत्म-समर्पण दिखाते हैं।
4. वे सांसारिक नहीं बल्कि संत कवि हैं क्योंकि वे मोह-माया, स्वार्थ और सामाजिक दिखावे से दूर हैं। वे आंतरिक पवित्रता पर बल देते हैं, ईश्वर की सर्वव्यापकता को मानते हैं और परम विनम्रता के साथ दास्य भाव से भक्ति करते हैं।

(च) समान अर्थ वाले शब्द (पर्यायवाची)

1. पानी – जल, नीर
2. सोना – स्वर्ण, कनक

3. स्वामी – प्रभु, नाथ
4. दीपक – दीया, प्रदीप

(छ) विपरीतार्थक (विलोम) शब्द

1. भरोसा X अविश्वास
2. स्वामी X दास
3. ज्योति X अंधकार
4. दिन X रात

(ज) समास विग्रह

1. अंग-अंग — प्रत्येक अंग (अव्ययीभाव समास)
2. चरण-कमल — कमल के समान चरण (कर्मधारय समास)
3. दिन-रात — दिन और रात (द्वंद्व समास)

(झ) आधुनिक मानक हिंदी रूप

1. बास = वास
2. जोति = ज्योति
3. बरै = जलती है
4. राती = रात
5. तीरथ = तीर्थ
6. दूजा = दूसरा

(ञ) अलंकार

1. “जैसे चितवत चंद चकोरा” — अनुप्रास अलंकार और उपमा अलंकार
2. “प्रभु जी तुम चंदन हम पानी” — उपमा भाव / रूपकातिशयोक्ति
3. “जहँ जहँ जाओ तुम्हारी पूजा” — पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार